Amrit Kalash

Vol.1

समय की कदर

रानी की बुढ़िया में...

सुप्रभात पिताजी!

सुप्रभात पार बेटा! आओ होल में बात करें।

बेटा! तुम अभी भरे हो लड़ा हो तो मेरा पहाड़ हैं कि तुम समय के महत्व को समझो और उसकी कदर करना सीखो।

आपका पिताजी! कृपया क्या आप मुझे समझा सकते हैं कि 'समय' क्या चीज है?

क्या तुम टीवीर ये लगी उस घड़ी को देख रहे हो? वह पूरी बात हमें समय बताती है।

ओह! अच्छा

अच्छा! तो समय की कदर करने के लिए जरूरी है कि मैं इस घड़ी को कायदे से साफ करता रहूँ।

एक कपाउंड बाद...

बेटा! क्या समय की कदर करना सीख गए?

हाँ पिताजी! मैं एकदम अच्छी से कदर कर रहा हूँ!

अच्छा! बेटा! तुम कायदा कैसे कदर कर रहे हो?

जी मैं हर रोज इसे कायदे से साफ कर रहा हूँ।हर दिन मैं तो इस घड़ी को फिलहाली पायजामे लगी है।

ये तुमने क्या किया बेटा? घड़ी तो बंद हो गयी और पेंडुलम भी नहीं हिल रहा

ओह

जब मुझे पिता पेंडुलम को साफ करना है...

देखो! घड़ी एक सरल मशीन है। पेंडुलम हमका एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। जा.जा. इसे मैं ठीक करता हूँ।

अब मैं समझा गया कि पेंडुलम इस घड़ी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

२ हजारों बाद...

अब तुम वहाँ हजारों में घड़ी की देखभाल कर रहे हो, क्या साथ में तुम समय की कदर करना सीख गए ?

जी पिताजी! अब मैं सुप्रभात की कायदे अच्छी से देखभाल कर रहा हूँ।

पार बेटा! समय की कदर करने का मतलब पेंडुलम साफ करना नहीं होता। देखो, तुमने तो पेंडुलम को भी खराब कर दिया

फिर कृपया आप ही समझाइए कि समय की कदर कैसे करनी चाहिए?

आजी,तुमें समय का अर्थ बताता हूँ। पेंडुलम के चलने से ही घड़ी चलती है। समय को भी साथ जाता है जब पेंडुलम एक ओर से दूसरी ओर जाने लगता है।

आप पेंडुलम के एक ओर से दूसरी ओर जाने के अंतराल को समय कहते हैं तो मैं उसकी कदर कैसे करूँ?

बहिरन समाज पुत्र बेटा,इसलिएसमय की कदर करने का सर्वश्रेष्ठ तरीका यह होता है कि तुम अपने काम में इतने लीन हो जाओ कि पेंडुलम के फिरने का तुम्हें पता भी न चले। इसका सरल अर्थ यह है कि यदि तुम अपने काम को अच्छी तरह न पूरी लगन और निष्ठा के साथ करोगे,तो समय की सही कदर कर पाओगे।

अब मैं समझ गया हूँ कि यदि मैं अपने काम को अच्छी तरह से साफ करूँ और ऐसे काम करूँ जिससे समाजी भलाई हो,सही सही तरीके से समय की सही कदर करना होता है।

शाबाश बेटा! अब बिलकुल सही समझा तुमने!

सारांश

हर एक मशीन का एक उद्देश्य होता है। घड़ी एक ऐसी ही मशीन है जो हमें समय की कदर करना सिखाती है। इसी तरह हुज़ूर राधास्वामी दयाल ने इंसान रूपी सूपर-मशीन बनाया है। उन्होंने हमें एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण अंग प्रदान किया है जिसे हम मस्तिष्क कहते हैं। यहाँ मस्तिष्क की तुलना घड़ी के पेंडुलम से की जा सकती है। मस्तिष्क पेंडुलम जैसे हिल तो नहीं सकता पर सही-गलत में अंतर ज़रूर कर सकता है। इसलिए जैसे इस कहानी में कहा गया है,हर एक व्यक्ति को समय की कदर करते हुए अच्छे काम करने चाहिए।

अब इस कहानी की तुलना यदि सतसंग की संस्कृती से की जाये तो हमें यह देखने को मिलता है कि हमारे संत सतगुरु स्वयं एक दुर्लभ,कीमती हीरा हैं जिसे शायद ही किसी ने देखा होगा। उन्हें हमें पूरे दिल से अपनाना चाहिए । हर सतसंगी मत्था टेकता है ,भेंट प्रदान करता है,प्रशाद बाँटता है और सुमिरन,ध्यान व भजन करता है पर एक सच्चा सतसंगी हमेशा अच्छे उद्देश्यों के साथ, सतसंग की संस्कृती को दिल से स्वीकार करता है। अगर इन सब कार्यों से यदि सब पर सकारात्मक असर होता है और अगर दिन प्रतिदिन संत सतगुरु के प्रति प्रेम बढ़ता रहेगा और यदि आपके उद्देश्य अच्छे होंगे,तब आपको ज़रूर यह लगने लगेगा की आप सही रास्ते पर जा रहे हैं वरना यह महसूस होगा कि आपने अपना पूरा समय व्यर्थ कर दिया है।

-परम गुरु हुज़ूर साहबजी महाराज के बचन
भाग-1,पृष्ठ-४४